नया नियम I

नया नियम I: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ –

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम की प्रस्तावना।
II. नए नियम का कालक्रम।
III. नियमों के बीच में।
IV. धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक इतिहास।

कक्षा #२:

V. सुसमाचार
   क. चार सुसमाचार।

कक्षा #३:

V. सुसमाचार (जारी.)
   ख. चारों सुसमाचारों की रूपरेखा।

VI. मसीह का जीवन
   क. मसीह का विवरण।
   ख. मसीह की ईश्वरीयता।
   ग. मसीह की रूपरेखा।

कक्षा #४:

VI. मसीह का जीवन (जारी.)
   घ. यीशु के प्रेरित।
   ङ. यीशु के आश्चर्यकर्म।

कक्षा #५:

VI. मसीह का जीवन (जारी.)
   च. यीशु का सूली पर चढ़ाया जाना
   परीक्षा।

नया नियम I

टिप्पणियाँ —

नया नियम I : परीक्षा
संभावित २० अंकीय प्रश्न

१) किन्हीं दो सुसमाचारों को चुनें; प्रत्येक का एक सारांश विवरण दें और यह बताएँ कि वे एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं (ऐसे बिंदुओं का उपयोग करें जैसे कि इसे किसके लिए संबोधित किया गया है, इसका लेखक, इसका विषय या उद्देश्य, मुख्य शब्द, मुख्य पद, और विशिष्ट विशेषताएँ) (पृष्ठ ३२३,३२४)।

२) मसीह की ईश्वरीयता को दर्शाने के लिए सुसमाचारों का उपयोग करें (कम से कम दो अलग-अलग सुसमाचारों से कुल सात अलग-अलग बिंदु लें) (पृष्ठ ३२९,३३०)।

३) यहूदी धर्म के चार विभिन्न संप्रदायों का संक्षिप्त विवरण दें। यह भी बताएँ कि वे एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न थे (पृष्ठ ३२१,३२२)।

संभावित १० अंकीय प्रश्न

१) मसीह के जन्म के लिए तैयार किए गए एक कारक का वर्णन करें (पृष्ठ ३१९)।

२) किसी एक सुसमाचार की रूपरेखा दें (पृष्ठ ३२५-३२७)।

३) मरकुस के सुसमाचार का उपयोग करते हुए मसीह के जीवन की सामान्य पाँच सूत्रीय रूपरेखा लिखें (इसमें कई सामान्य पवित्रशास्त्र के संदर्भ शामिल हैं (पृष्ठ ३३१)।

४) मूल १२ प्रेरितों में से एक का संक्षिप्त विवरण दें (पवित्रशास्त्र के संदर्भ शामिल करें) (पृष्ठ ३३३-३२७)।

५) यीशु के दो आश्चर्यकर्मों का एक या दो वाक्यों में विवरण दें (पवित्रशास्त्र के संदर्भ शामिल करें) (पृष्ठ ३३८,३३९)।

६) सूली पर चढ़ाए जाने के दिन सुबह १०:०० से ११:०० बजे के बीच यीशु का अपमान और मज़ाक उड़ाया गया था: (चार विवरण दें-संदर्भ आवश्यक नहीं) (पृष्ठ ३४१)।

नया नियम I

टिप्पणियाँ –

I. पाठ्यक्रम की प्रस्तावना

नए नियम (N.T.) के पाठ्यक्रमों की श्रृंखला:

पुराने नियम की श्रृंखला के पाठ्यक्रमों की तरह, हम तीन संक्षिप्त पाठ्यक्रमों की श्रृंखला में संपूर्ण नए नियम का अध्ययन नहीं कर सकते हैं। हमारा लक्ष्य नए नियम के विषय का सर्वेक्षण करना, उन्हें व्यवस्थित करना और सामान्य विषयों का अध्ययन करना है, साथ ही कुछ चयनित विशिष्ट विषयों का भी अध्ययन करना है।

इन तीन पाठ्यक्रमों को समाप्त करने के बाद, हमें नए नियम (N.T.) की सामान्य समझ को संप्रेषित करने में सक्षम हो जाना चाहिए। हमें नए नियम (N.T.) के कुछ विशिष्ट भागों और विषयों के बारे में गहरे स्तर पर संवाद करने में सक्षम हो जाना चाहिए।

हमारा लक्ष्य आगे नए नियम की एक संपूर्ण इकाई के रूप में और अलग-अलग भागों के रूप में, नए नियम (N.T.) की २७ पुस्तकों के लिए समझ का एक रूपरेखा स्थापित करके अध्ययन करना है।

नए नियम के तीन पाठ्यक्रम:

नया नियम I: सुसमाचार और यीशु मसीह। इसमें मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना शामिल हैं।

नया नियम II: कलीसिया का जन्म। इसमें प्रेरितों के काम, रोमियों, १ और २कुरिन्थियों, गलातियों और १ और २ थिस्सलुनीकियों को शामिल किया गया है।

नया नियम III: कलीसिया की बढ़ोतरी। इसमें कैद में लिखी हुई पत्री, चरवाही के लिए पत्री, सामान्य पत्री और इब्रानियों शामिल हैं।

पाठ्यक्रमों को एक श्रृंखला के रूप में विकसित किया गया है। यदि आप पहले पाठ्यक्रम को समाप्त नहीं करते हैं, तो पाठ्यक्रम # २ से शुरू करें जहाँ से आपने पाठ्यक्रम #१ को छोड़ा था। पाठ्यक्रम #३ शुरू करने के लिए भी ऐसा ही है (इस कारण पाठ्यक्रम #३ में कम सामग्री है क्योंकि पहले पाठ्यक्रमों का कुछ "भाग" इसमें है)।

नया नियम I

टिप्पणियाँ –

क. नया नियम

१. हम एक नई वाचा (२ कुरिन्थियों ३:६) और उत्तम वाचा (इब्रानियों ७:२२) के साथ उत्तम प्रतिज्ञाओं (इब्रानियों ८:६) के सेवक हैं।

२. नया नियम परमेश्वर और मनुष्य के बीच सभी वाचाओं की परिणति है। अन्य सभी वाचाएँ इस वाचा की ओर ले जाती हैं और इसे दर्शाती हैं।

ख.इस पाठ्यक्रम की विषय-सूची।

१. हम नए नियम की पृष्ठभूमि की कुछ जानकारी का अध्ययन करने के द्वारा आरंभ करेंगे।

क. नया नियम (N.T.) कालक्रम।

ख. पुराने और नए नियम के बीच की अवधि में घटने वाली घटनाएँ।

ग. ऐतिहासिक विचार (धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक)।

२. सुसमाचार।

३. मसीह का जीवन।

II. नए नियम का कालक्रम।

क. **नए नियम की किताबें और अनुमानित लिखित वर्ष** (नया नियम (N.T.) श्रृंखला के तीन पाठ्यक्रमों के अनुसार सूचीबद्ध)।

सुसमाचार		कलीसिया का जन्म	कलीसिया का बढ़ोतरी	
मत्ती मरकुस लूका यूहन्ना – ८०	*(५०-७० ई. के बीच लिखा गया।)*	१ व २ थिस्सलुनीकियों – ५० गलातियों – ५३ रोमियों – ५५ १ कुरिन्थियों – ५६ २ कुरिन्थियों – ५७ प्रेरितों के काम– ६२	**कैद में लिखी हुई पत्रियाँ** इफिसियों – ६२ कुलुस्सियों – ६२ फिलिप्पियों – ६२ फिलेमोन – ६२	**चरवाही के लिए पत्रियाँ** १ तीमुथियुस – ६२ तीतुस – ६२ २ तीमुथियुस – ६६
			सामान्य पत्रियाँ १ पतरस – ६४ २ पतरस – ६६ १,२,३ यूहन्ना – ९० यहूदा – ९० प्रकाशितवाक्य – ९५ याकूब – ४५ या ६२ इब्रानियों – ६६	

ख. घटनाक्रम द्वारा कालक्रम।

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिंदु

घटनाओं की निम्नलिखित सूची और नए नियम (N.T.) के कालक्रम की समग्र समझ को प्राप्त करने के लिए अनुमानित वर्षों का उपयोग करें।

१. यीशु का जन्म (मत्ती २:१)—३ या ४ ई.पू।

२. यीशु की सेवकाई की शुरुआत (लूका: ३:२३)-२७ ई।

३. मसीह की मृत्यु और पिन्तेकुस्त का दिन (मरकुस १५:३७ और प्रेरितों के काम २:१) -३० ई।

४. पौलुस का परिवर्तन (प्रेरितों के काम ९:१-१९)—३२ ई।

५. पौलुस की यरूशलेम की पहली यात्रा (प्रेरितों के काम ९:२६-३०)--३४ ई।

६. प्रेरित याकूब की मृत्यु (प्रेरितों के काम १२:२)--४३ ई।

७. पौलुस की यरूशलेम की दूसरी यात्रा (प्रेरितों के काम ११:३०)--४७ ई।

८. पौलुस की पहली सेवकाई यात्रा (प्रेरितों के काम १३:४-१४:२८)—४७,४८ ई।

९. पौलुस की यरूशलेम की तीसरी यात्रा (प्रेरितों के काम १५)--४८ ई।

१०. अपनी दूसरी सेवकाई यात्रा के दौरान कुरिन्थुस में पौलुस का समय (प्रेरितों के काम १८:१,१८)-५०-५१ ई।

११. अपनी तीसरी सेवकाई यात्रा के दौरान इफिसुस में पौलुस का समय (प्रेरितों के काम १९)—५२-५५ ई।

१२. यरूशलेम में पौलुस की कैद (प्रेरितों के काम २१:१७-२३:३१)--५७ ई।

१३. रोम में पौलुस के दो वर्ष (प्रेरितों के काम २८:३०)—६०-६२ ई।

१४. यरूशलेम का विनाश--७० ई।

टिप्पणियाँ —

III. नियमों के बीच।

क. नियमों की अवधि का कालक्रम।

चर्चा का बिंदु

निम्नलिखित इतिहास की विभिन्न अवधियों की एक सूची है जिसने पुराने नियम की अंतिम पुस्तक (मलाकी--४३० ई. पू.) और मसीह के जन्म (४ ई. पू.) के लेखन को अलग किया। इन ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित प्रश्नों और टिप्पणियों की अनुमति दें।

१. ४५०-३३० ई. पू.: फारसी काल।

क. इस अवधि के दौरान फारसियों ने यहूदा को नियंत्रित किया। उन्होंने यहूदियों को अपने परमेश्वर की उपासना करने की अनुमति दी।

ख. इस अवधि के दौरान उच्च याजकों ने स्थानीय सरकार पर शासन किया।

२. ३३०-१६६ ई. पू: हेलेनिस्टिक (यूनानी) काल।

क. सिकंदर महान ने अधिकांश ज्ञात संसार पर विजय प्राप्त की। वह ग्रीक संस्कृति को संसार के सभी हिस्सों में फैलाने में सक्रिय थे।

ख. सिकंदर ने यहूदियों को बहुत स्वतंत्रता दी। उन्हें परमेश्वर की आराधना करने और उनके नियमों का पालन करने की अनुमति थी।

ग. ग्रीक शासन ने पुराने नियम का ग्रीक भाषा (सेप्टुआजेंट) में अनुवाद किया।

घ. इस अवधि के दौरान, मिस्र और सीरियाई शासन ने यहूदियों पर अधिक से अधिक अत्याचार करना शुरू कर दिया। अवधि के अंत में एंटिओकस एपिफेन्स ने मंदिर को अशुद्ध कर दिया और यहूदी धर्म को प्रतिबंधित कर दिया।

टिप्पणियाँ –

३. १६६-६३ ई. पू.: हसमोनियन काल।

क. कई वर्षों के क्रूर उत्पीड़न के बाद, यहूदियों ने सीरियाई शासकों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

ख. मैकाबियस और जॉन हिरकेनस की अगुवाई में, यहूदियों ने १०० वर्षों तक एक स्वतंत्र राज्य की स्वतंत्रता का आनन्द लिया।

४. ६३ ई. पू: रोमन साम्राज्य का आरम्भ।

क. रोमन सेनापति पोम्पी ने ६३ ई.पू. में यरूशलेम पर आक्रमण किया और उसे जीत लिया। पूरे फिलिस्तीन पर रोमन सम्राट का शासन था।

ख. मसीह के जन्म के समय, हेरोदेस महान पूरे फिलिस्तीन का शासक था। १९ ई.पू. में उसने मंदिर का पुनर्निर्माण आरम्भ किया।

ख. मसीह के जन्म को तैयार करने वाले कारक।

१. सिकंदर महान द्वारा विश्वव्यापी विजय के परिणामस्वरूप संसार भर में एक आम भाषा के रूप में ग्रीक की स्थापना हुई। संस्कृति और भाषा के एकीकरण ने सुसमाचार के तेज़ी से प्रसार का मार्ग तैयार किया।

२. रोमन साम्राज्य ने एक विश्वव्यापी, स्थिर सरकार की स्थापना की। शांति हो गयी। रोमनों ने कानूनों और सड़कों की एक प्रणाली का निर्माण किया जिसने यात्रा और संचार को अधिक कुशल और सुरक्षित बना दिया। इन बातों के कारण भी सुसमाचार का तेज़ी से प्रसार हुआ।

३. शासकों को सताने की श्रृंखला ने अंततः यहूदियों को तितर-बितर कर दिया। वे परमेश्वर की एकता, एक मसीहा की आशा, और पवित्रशास्त्र की सच्चाई के संदेशों को फैलाते हुए संसार के सभी हिस्सों में फैले हुए थे। इससे सुसमाचार का तेजी से प्रसार भी हुआ।

टिप्पणियाँ —

IV. धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक इतिहास।

क. धर्मनिरपेक्ष इतिहास।

१. हेरोदेस का घराना।

क. हेरोदेस महान ने यहूदिया पर ३७-४ ई.पू. तक शासन किया। जब यीशु का जन्म हुआ तब वह राजा था।

ख. निम्नलिखित सूची हेरोदेस के वंशजों की विभिन्न पीढ़ियों को दिखाती है और यह बताती है कि बाइबल में उनका उल्लेख कहाँ किया गया है।

१) हेरोदेस अंतिपास (लूका ३:१; मत्ती १४:१-१२; मरकुस ६:१४-२९; लूका २३:७-१२)।

२) अरिखलाउस (मत्ती २:१९-२३)।

३) हेरोदेस फिलेप्पुस II (लूका ३:१)।

४) हेरोदेस अग्रिप्पा I (प्रेरितों के काम १२:१-२४)।

५) हेरोदेस अग्रिप्पा II (प्रेरितों के काम २५:१३-२६:३२)।

२. रोमन सम्राट।

क. ऑगस्टस सीजर (२७ ई.पू.-१४ ई.)

ख. तिबेरियस सीजर (१४-३७ ई.)

ग. कैलीगुला (३७-४१ ई.)

घ. क्लॉडियस (४१-५४ ई.)

ङ. नीरो (५४-६८ ई.)

च. गल्बा, ओथो, विटेलियस (६८,६९ ई.)

छ. वेस्पासियन (६९-७९ ई.)

ज. तीतुस (७९-८१ ई.)

झ. डोमिनिटियन (८१-९६ ई.)

टिप्पणियाँ —

ख. धार्मिक इतिहास

लेखक की टिप्पणी:

यहूदियों पर यूनानियों के प्रभाव की प्रतिक्रिया के रूप में, यहूदी धर्म के भीतर कई अलग-अलग संप्रदाय विकसित हुए। इनमें फरीसी, सदूकी, एसेन, हेरोडियन, कट्टरपंथी और शास्त्री शामिल थे।

१. फरीसी।

क. इस शब्द का अर्थ है "अलग किए गए"।

ख. यह संभवतः ईसा से लगभग १५० वर्ष पहले ग्रीक संस्कृति के भ्रष्ट प्रभावों की प्रतिक्रिया के रूप में शुरू हुआ था।

ग. मूल रूप से, इस संप्रदाय का उद्देश्य संसार में पवित्रता और अलगाव को बढ़ावा देना था। दुर्भाग्य से, व्यवस्था के बारे में एक अल्पज्ञता कानूनीवाद पर इसका ध्यान केंद्रित होने से बहुत पहले नहीं था।

२. सदूकी।

क. उच्च वर्ग के यहूदी और महायाजकों का संगठन।

ख. उन्होंने धर्मनिरपेक्ष शासकों के साथ सहयोग किया और धन और प्रतिष्ठा का लाभ उठाया।

ग. वे मंदिर के प्रशासन और कर्मकांडों के लिए जिम्मेदार थे।

घ. उन्होंने व्यवस्था के फरीसियों के कार्यों का विरोध किया। वे पुनरुत्थान, स्वर्गदूतों या आत्माओं में विश्वास नहीं करते थे।

ङ. सदूकी संप्रदाय का अंत ७० ई. में मंदिर के विनाश के साथ हुआ।

टिप्पणियाँ —

३. एसेन्स।

क. सदूकियों ने सामाजिक स्तर पर स्वयं को दूसरों से अलग कर लिया। फरीसियों ने धार्मिक स्तर पर स्वयं को दूसरों से अलग कर लिया। एसेन्स ने स्वयं को भौगोलिक स्तर पर दूसरों से अलग कर लिया (वे शारीरिक रूप से समाज से हट गए)।

ख. वे पहाड़ों और गुफाओं में मठवासी समुदायों में रहते थे (उदाहरण के लिए मृत सागर सूचीपत्र कुमरान गुफाओं में पाए गए थे जहाँ एसेन्स का एक समूह रहता था)।

ग. एसेन्स एक कठिन जीवन जीते थे। उनका जीवन बहुत ही अनुशासित और सरल था।

घ. उन्होंने मंदिर में उपासना में भाग नहीं लिया क्योंकि वे स्वयं को एकमात्र सच्चे और शुद्ध इस्राएल के रूप में देखते थे।

४. अन्य।

क. हेरोडियन - राजनीतिक रूप से उन्मुख यहूदियों का एक कुलीन समूह जो हेरोदेस की सरकार का समर्थन करता था।

ख. कट्टरपंथी - जैसे फरीसी सदूकियों के विपरीत थे, कट्टरपंथी लोग हेरोडियन के विपरीत थे। वे राजनीतिक रूप से रोमन शासकों के विरोधी थे। वहाँ अत्यधिक देशभक्ति के कारण अंततः ७० ई. में यरुशलेम का विनाश हुआ।

ग. शास्त्री - वे धार्मिक "विधिवक्ता" थे जिन्होंने शास्त्रों की नकल की।

V. सुसमाचार।

क. सुसमाचार की चार पुस्तकें।

मत्ती, मरकुस और लूका इतने समान हैं कि उन्हें "सिनॉप्टिक गॉस्पेल" कहा जाता है। यूहन्ना कुछ अलग है लेकिन इसमें बहुत सी समान बातें शामिल है।

नया नियम I

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिंदु

फिर ४ सुसमाचार क्यों हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए निम्नलिखित आरेखों का अध्ययन करें।

पुस्तक	इसे किसे संबोधित किया गया है	लेखक	उद्देश्य	मुख्य शब्द
मत्ती	यहूदी: १. O.T. से १०० से अधिक उद्धरण २. यीशु की वंशावली अब्राहम से आरम्भ होती है ३. यह यहूदी रीति-रिवाजों की व्याख्या नहीं करता ४. यहूदी शब्दों का उपयोग करता है (उदाहरण के लिए, परमेश्वर के राज्य के बजाय स्वर्ग का राज्य) ५. यीशु को दाऊद के पुत्र के रूप में कहा गया है ६. परंपरा कहती है कि मत्ती यहूदी धर्मांतरितों के लिए था	मत्ती: एक यहूदी चुंगी लेनेवाला जो रोमियों के लिए काम करता था; वह शायद शॉर्टहैंड करना जानता था जिससे उसे अपनी किताब लिखने में सहायता मिली हो, वह बारह प्रेरितों (लेवी) में से एक था।	नासरत का यीशु यहूदी भविष्यवाणी का राजा और मसीहा था; पुस्तक को व्यवस्था की ५ पुस्तकों (५ खंड) के साथ मेल खाने के लिए लिखा गया है; शिक्षण को विभिन्न आख्यानों के भीतर रखा गया है	पूरा हुआ; राज्य (५० बार); स्वर्ग का राज्य; राजा, "वह जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था"
मरकुस	रोमन अन्यजातियाँ: 1. O.T. से सम्बंधित कुछ संदर्भ हैं। यहूदी शब्दों/रिवाजों की व्याख्या करने में समय लिया	यूहन्ना मरकुस: बरनबास का एक रिश्तेदार जिसने उसके और पौलुस के साथ यात्रा की; पतरस का एक साथी	मुख्य रूप से ध्यान यीशु के कार्यों पर है; केवल १६ अध्यायों में १९ आश्चर्यकर्म हैं	तुरंत
लूका	थिओफिलस/अन्यजातियाँ: १. यहूदी रिवाजों की व्याख्या करने में समय लिया २. कभी-कभी इब्री शब्दों के लिए ग्रीक नामों का प्रयोग किया गया वंशावली आदम से शुरू होती है और यीशु के प्रलोभनों का क्रम उत्पत्ति ३:६ (सार्वभौमिक) से मेल खाता है	लूका; एक वैद्य जिसने प्रेरितों के काम भी लिखा; पौलुस का एक मित्र और साथी (ध्यान दें कि वह प्रेरितों के काम में "हम " को कैसे संदर्भित करता है)	मसीह के जीवन का एक कालानुक्रमिक और क्रमबद्ध वर्णन (देखें १:१-४); उद्धारकर्ता के रूप में यीशु के स्वभाव और उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करना	निर्धन; संपत्ति; करुणा
यूहन्ना	ग्रीक अन्यजातियाँ: १. ऐसा लगता है कि मसीह के बारे में विधर्मियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जिसका आरम्भ यूनानियों के साथ हुआ था २. अधिक आत्मिक रूप से दार्शनिक; धार्मिक; यूनानियों के लिए अनुकूलित	यूहन्ना: प्रिय प्रेरित; जिसने १,२,३ यूहन्ना और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी लिखी	विश्वास और अनन्त जीवन के विषयों पर बल दिया गया; परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में विश्वास को प्रेरित करने के लिए; विधर्म को नकारने के लिए	विश्वास अनन्त जीवन

नया नियम I

टिप्पणियाँ —

पुस्तक	विशिष्ट लक्षण	मुख्य पद	मसीह के लिए नाम	मसीह के कार्य	मसीह का चेहरा	सर्वश्रेष्ठ उपयोग
मत्ती	१. पहाड़ी उपदेश (५-७) २. महान आज्ञा (२८:१८-२०) ३. अध्याय १३ के दृष्टान्त (खरपतवार, छिपा हुआ खजाना, मोती, जाल) ४. सर्वनाश वचन (२४-२५) ५. KOG के सिद्धांत (१८,२०) ६. राजा यीशु पर बल	२१:५	दाऊद का पुत्र	राजा: राजा की सेवकाई	सिंह	शिक्षक
मरकुस	१. यह सबसे छोटा सुसमाचार है २. यह संक्षिप्त और सार से भरा है ३. इसमें यीशु के कई आश्चर्यकर्मों को दर्ज किया गया है, लेकिन इसमें बहुत अधिक टिप्पणी शामिल नहीं है ४. शब्द "तुरंत" १७ बार दोहराया जाता है और पुस्तक को छोटा और घटना उन्मुख रखने के लिए कार्य करता है	१०:४५	परमेश्वर का पुत्र	दास: याजक की सेवकाई	बैल	सुसमाचारक, प्रेरित
लूका	१. परमेश्वर की सार्वभौमिक कृपा और मनुष्य के लिए उनकी करुणा को दर्शाता है २. प्रार्थना और धन पर बल ३. महिलाएं प्रमुख हैं ४. यीशु के जन्म पर बल ५. यीशु के जीवन की सबसे संपूर्ण जीवनी	१९:१०	मनुष्य का पुत्र	उद्धारकर्ता याजक की सेवकाई	मनुष्य	पासबान, भविष्यद्वक्ता
यूहन्ना	१. सरल भाषा का प्रयोग २. फिर भी सबसे गहरा सुसमाचार ३. मसीह के व्यक्तित्व पर बल (एक पूर्ण प्रकाशन) ४. पवित्र आत्मा पर बल ५. यीशु के "मैं हूँ" कथन शामिल हैं ६. मसीह की ईश्वरीयता पर बल ७. पुस्तक का १/२ भाग यीशु के अंतिम दिनों का है ८. पिता परमेश्वर पर बल	२०:३१	परमेश्वर का वचन	अनन्त पुत्र/ "लोगो": भविष्यद्वक्ता की सेवकाई	उक़ाब	भविष्यद्वक्ता

नया नियम I

टिप्पणियाँ —

लेखक की टिप्पणी:

मसीह की सेवकाई की अधिक विस्तृत व्याख्या के लिए मोटमोट (MOTMOT) पाठ्यक्रम मसीही अगुवाई को देखें (मसीह की अवधारणा एज़्रा १:१० और प्रकाशितवाक्य ४:७ पर आधारित है)।

साथ ही, "सर्वोत्तम उपयोग" श्रेणी का पिछला विचार प्रत्येक सुसमाचार को इफिसियों ४:११ में पाई गई सेवकाई के साथ मिलाना है। ये केवल सुझाव हैं।

चार अलग-अलग सुसमाचार हैं क्योंकि वे प्रत्येक सेवकाई और यीशु के एक अलग पक्ष या पहलू पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इन आरेखों का उपयोग इन विभिन्न पहलुओं को दिखाने के लिए, साथ ही साथ एक सामान्य अध्ययन और चार सुसमाचारों की तुलना करने के लिए किया जा सकता है।

ख. चार सुसमाचारों की रूपरेखा।

चर्चा का बिंदु

प्रत्येक पुस्तक की समग्र समझ प्राप्त करने के लिए रूपरेखा के बिंदुओं के अनुसार प्रत्येक सुसमाचार के माध्यम से निम्नलिखित रूपरेखा और पृष्ठ का अध्ययन करें।

१. मत्ती (एक शिक्षण रूपरेखा)।

क. पहाड़ पर उपदेश (अध्याय ५-७)।

ख. सेवकाई (अध्याय १०)।

ग. स्वर्ग का राज्य (अध्याय १३)।

घ. कलीसिया में अनुशासन और संगति (अध्याय १८)।

ङ. सर्वनाशक वचन (अध्याय २४-२५)।

टिप्पणियाँ —

२. मरकुस (एक भौगोलिक रूपरेखा)।

क. यरदन नदी में सेवकाई की तैयारी (मरकुस १:१-१३)।

ख. गलील में सेवकाई (मरकुस १:१४-६:३०)।

ग. गलील से पीछे हटना (अध्याय ६-९)।

घ. पेरिया और यहूदिया में सेवकाई (अध्याय १०)।

ङ. यरूशलेम में (अध्याय ११-१३)।

च. गुलगुता में: मृत्यु और पुनरुत्थान (अध्याय १४-१६)।

३. लूका (उद्धारकर्ता के जीवन में घटनाओं की रूपरेखा)।

क. प्रस्तावना (लूका १:१-१४)।

ख. उद्धारकर्ता की घोषणा (अध्याय १,२)।

ग. उद्धारकर्ता का प्रकटन (लूका ३-४:१५)।

घ. उद्धारकर्ता की सक्रिय सेवकाई (लूका ४:१६-९:५०)।

ङ. उद्धारकर्ता के क्रूस का मार्ग (लूका ९:५१-१८:३०)।

च. उद्धारकर्ता की पीड़ा (लूका १८:३१-२३:४९)।

छ. उद्धारकर्ता का पुनरुत्थान (अध्याय २४)।

४. यूहन्ना (यीशु के "मैं हूँ" कथनों का उपयोग करते हुए एक जीवनी की रूपरेखा)।

क. मसीहा (यूहन्ना ४:२६)।

ख. जीवन की रोटी (यूहन्ना ६:३५)।

ग. ऊपर से (यूहन्ना ८:२३)।

घ. अनन्त (यूहन्ना ८:५८)।

ङ. जगत की ज्योति (यूहन्ना ९:५)।

टिप्पणियाँ –

च. द्वार (यूहन्ना १०:७)।

छ. परमेश्वर का पुत्र (यूहन्ना १०:३६)।

ज. पुनरुत्थान और जीवन (यूहन्ना ११:२५)।

झ. प्रभु और स्वामी (यूहन्ना १३:१३)।

ञ. मार्ग, सत्य और जीवन (यूहन्ना १४:६)।

ट. सच्ची दाखलता (यूहन्ना १५:१)।

ठ. अल्फा और ओमेगा; पहला और आखिरी (प्रकाशितवाक्य १:८; १:१७)। यह अंतिम बिंदु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से जोड़ा गया है, जिसे यूहन्ना ने भी लिखा था।

VI. मसीह का जीवन।

चर्चा का बिंदु

मसीह कौन है और उसके चरित्र का अध्ययन करने और चर्चा करने के लिए मसीह के निम्नलिखित विवरणों का उपयोग करें।

क. मसीह का विवरण।

१. यूहन्ना का विवरण (यूहन्ना के सुसमाचार के प्रत्येक अध्याय के अनुसार)।

क. परमेश्वर के पुत्र (यूहन्ना १:१-१४)।

ख. मनुष्य के पुत्र (यूहन्ना २:१-१०)।

ग. ईश्वरीय शिक्षक (यूहन्ना ३:२-२१)।

घ. आत्मा को जीतनेवाले (यूहन्ना ४:७-२९)।

ङ. महान चिकित्सक (यूहन्ना ५:१-९)।

च. जीवन की रोटी (यूहन्ना ६:३२-५८)।

टिप्पणियाँ —

छ. जीवन का जल (यूहन्ना ७:३७)।

ज. निर्बलों के रक्षक (यूहन्ना ८:३-११)।

झ. जगत की ज्योति (यूहन्ना ९:१-३९)।

ञ. अच्छा चरवाहा (यूहन्ना १०:१-१६)।

ट. जीवन के राजकुमार (यूहन्ना ११:१-४४)।

ठ. १ राजा (यूहन्ना १२:१२-१५)।

ड. दास (यूहन्ना १३:१-१०)।

ढ. सांत्वना देने वाला (यूहन्ना १४:१-३) ।

ण. सच्ची दाखलता (यूहन्ना १५:१-१६)।

त. पवित्र आत्मा के दाता (यूहन्ना १६:१-१५)।

थ. महान मध्यस्थ (यूहन्ना १७:१-२६)।

द. पीड़ित (यूहन्ना १८:१-११) ।

ध. उद्धारकर्ता जिसका उत्थान हुआ (यूहन्ना १९:१६-१९)।

न. मृत्यु पर जय पानेवाले (यूहन्ना २०:१-३१)।

ऩ. पश्चाताप करने वालों के उद्धारकर्ता (यूहन्ना २१:१-१७)।

२. पतरस का विवरण।

क. जीवित परमेश्वर के पुत्र (मत्ती १६:१६)।

ख. सत्य का एकमात्र स्रोत (यूहन्ना ६:६८)।

ग. आत्माओं के चरवाहे और रखवाले (१ पतरस २:२५)।

टिप्पणियाँ —

३. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से विवरण।

क. विश्वासयोग्य साक्षी (प्रकाशितवाक्य १:५)।

ख. अल्फा और ओमेगा (प्रकाशितवाक्य १:८)।

ग. यहूदा के गोत्र का सिंह (प्रकाशितवाक्य ५:५)।

घ. मेमना (प्रकाशितवाक्य १७:१४)।

ङ. परमेश्वर का वचन (प्रकाशितवाक्य १९:१३)।

च. राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु (प्रकाशितवाक्य १९:१६)।

चर्चा का बिंदु

निम्नलिखित सूची का उपयोग ऐसे कई तरीकों का अध्ययन करने के लिए करें जिनमें सुसमाचार स्पष्ट रूप से बताते हैं कि यीशु ही परमेश्वर हैं।

ख. मसीह की ईश्वरीयता।

१. यूहन्ना ने उन्हें परमेश्वर कहा (यूहन्ना १:१)।

२. थोमा ने उन्हें परमेश्वर कहा (यूहन्ना २०:२८)।

३. उन्हें पिता परमेश्वर ने परमेश्वर कहा (इब्रानियों १:८)।

४. वह सृष्टि से पहले पिता के साथ थे (यूहन्ना १७:५)।

५. वह अब्राहम से पहले थे (यूहन्ना ८:५१-५९)।

६. उन्हें महिमा/आराधना मिली (मत्ती १४:३३)। याद रखें, केवल परमेश्वर की आराधना की जा सकती है (देखें प्रकाशितवाक्य २२:८,९; प्रेरितों के काम १०:२५, २६; यशायाह ४२:८: प्रेरितों के काम ३:११,१२; प्रेरितों के काम १४:११-१५)।

७. उन्होंने पापों को क्षमा किया (मरकुस २:५-११)।

८. वह सभी चीजों के सृष्टिकर्ता और निर्माता हैं (कुलुस्सियों १:१६)।

९. उन्होंने पृथ्वी और स्वर्ग पर सारा अधिकार होने का दावा किया (मत्ती २८:१८)।

टिप्पणियाँ —

१०. वह सब बातों को संभालते और उनके नियंत्रक हैं (इब्रानियों १:३)।

११. उन्होंने कहा: "मैं और पिता एक हैं" (यूहन्ना १०:३०)।

१२. उन्होंने कहा: "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है" (यूहन्ना १४:९)।

१३. उन्होंने कहा: "मैं हूँ" (यूहन्ना ८:५८; मरकुस १४:६२)। "मैं हूँ", परमेश्वर का व्यक्तिगत नाम है (यहोवा: निर्गमन ३:१४)। जैसा कि हमने पहले देखा, यीशु ने यूहन्ना के सुसमाचार में यह कई बार कहा है।

१४. बाइबल में "यीशु" और "परमेश्वर" शब्द अकसर आपस में बदल दिए जाते हैं (देखें मरकुस १:१,१४)।

१५. निम्नलिखित कार्य स्वयं परमेश्वर के अलावा और कौन कर सकता है:

क. वह पानी पर चले।

ख. प्रकृति ने उनकी आज्ञा मानी।

ग. उन्होंने बीमारों को चंगा किया।

घ. उन्होंने अंधों को आँखें दीं।

ङ. उन्होंने लँगड़ों को चलाया और बहरों को चंगा किया।

च. उन्होंने दुष्टात्माओं को निकाला।

छ. उन्होंने पानी को दाखरस में बदल दिया और भोजन को कई गुना बढ़ा दिया।

ज. उन्होंने मरे हुओं को जिलाया।

नया नियम I

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिंदु

मसीह के जीवन का सामान्य अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित रूपरेखाओं का प्रयोग करें।

ग. मसीह के जीवन की रूपरेखा।

१. सामान्य रूपरेखा।

क. अभिषेक का वर्ष (मरकुस अध्याय १:१-१४-१)।

ख. लोकप्रियता का वर्ष (मरकुस अध्याय १:१६-५:४३--५)।

ग. विरोध का वर्ष (मरकुस अध्याय ६:१-१०:५२--५)।

घ. आखरी सप्ताह (मरकुस अध्याय ११:१-१५:४७--५)।

ङ. जी उठने और उसके बाद (मरकुस अध्याय १६--१)।

२. विशिष्ट रूपरेखा।

क. अभिषेक का वर्ष (२६/२७ ई.)।

१) यीशु का बपतिस्मा (लूका अध्याय ३)।

२) यीशु की परीक्षा (लूका अध्याय ४)।

३) यीशु ने मंदिर को शुद्ध किया (यूहन्ना अध्याय २)।

४) सामरिया में पुनरुद्धार (यूहन्ना अध्याय ४)।

टिप्पणियाँ —

ख. लोकप्रियता का वर्ष (२७/२८ ई.)।

१) चेलों का बुलाया जाना और १२ चेलों का चुनाव (लूका अध्याय ५-६)।

२) पहाड़ पर उपदेश (लूका अध्याय ६)।

३) गलील के माध्यम से पहली प्रचार यात्रा (लूका अध्याय ४)।

४) परमेश्वर के राज्य के दृष्टान्त (लूका अध्याय ८)।

५) याईर की बेटी को फिर से ज़िंदा किया जाना (लूका अध्याय ८)।

६) यीशु द्वारा १२ (लूका अध्याय ९) प्रेरितों का भेजा जाना।

ग. विरोध का वर्ष (२९/३० ई.)

१) यीशु ने ५००० को भोजन कराया (लूका अध्याय ९)।

२) पतरस का यीशु को मसीह के रूप में अंगीकार करना (लूका अध्याय ९)।

३) रूपान्तरण (लूका अध्याय ९)।

४) लाजर का जी उठना (यूहन्ना अध्याय ११)।

५) यीशु ने यरूशलेम की अपनी अंतिम यात्रा शुरू की (लूका अध्याय १७)।

६) यीशु ने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की घोषणा की (लूका अध्याय १८)।

घ. अंतिम सप्ताह (रविवार से शुक्रवार)।

१) यरूशलेम में विजयी प्रवेश (लूका अध्याय १९--रविवार)।

२) अंतिम भोज (लूका अध्याय २२-गुरुवार)।)

३) गतसमनी के बगीचे में (लूका अध्याय २३--गुरुवार की रात/शुक्रवार की सुबह)।

४) क्रूस पर चढ़ाया जाना (लूका अध्याय २३-शुक्रवार)।

५) गाड़ा जाना (लूका अध्याय २३-शुक्रवार)।

टिप्पणियाँ —

ङ. पुनरुत्थान और उसके बाद।

१) खाली कब्र (लूका अध्याय २४)।

२) विभिन्न रूप (लूका अध्याय २४)।

३) स्वर्गारोहण (लूका अध्याय २४)।

चर्चा का बिंदु

निम्नलिखित खंड प्रत्येक मूल प्रेरितों और बाद में जोड़े गए लोगों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है। उनके जीवन की सामान्य बातों पर ध्यान दें- शहादत। क्या हम उतने ही प्रतिबद्ध हैं जितने ये लोग थे? क्या हम मसीह की सेवा करने के उन परिणामों का सामना करने के लिए तैयार हैं?

घ. **यीशु के प्रेरित।** मूल १२ प्रेरित (मत्ती १०:२-४; मरकुस ३:१६-१९; लूका ६:१३-१६) और दो अन्य।

१. शमौन पतरस (इसे कैफा के नाम से भी जाना जाता है)।

क. यह एक मछुआरे थे जो तीन प्रेरितों में से एक बन गये (मत्ती १७:१; २६:३७; मरकुस ५:३७)।

१) वह स्नेही और कोमल थे (मत्ती २६:७५; यूहन्ना १३:९; २१:१५-१७), फिर भी शायद वह आवेगी हो सकते हैं (मत्ती १४:२८; १७:४; यूहन्ना २१:७)।

२) उन्होंने बलिदान दिया (मरकुस १:१८), फिर भी शायद वह स्वार्थी हो सकते हैं (मत्ती १९:२७)।

३) उनके पास महान आत्मिक अंतर्दृष्टि थी (यूहन्ना ६:६८), फिर भी वह गहरी सच्चाई को समझने में धीमे थे (मत्ती १५:१५,१६)।

४) वह बहादुर थे (प्रेरितों के काम ४:१९,२०; ५:२८,२९), फिर भी शायद वह डरपोक हो सकते हैं (मरकुस १४:६७-७१)।

टिप्पणियाँ —

ख. मरकुस का सुसमाचार पतरस के मसीह के विवरण को दर्शाता है। पतरस के पास पूरे एशिया और फ़िलिस्तीन में यहूदियों के लिए एक सेवकाई थी और हो सकता है कि वह सुसमाचार की घोषणा करने के लिए बाबुल तक गये हों (१ पतरस ५:१३)।

ग. परंपरा कहती है कि उन्हें रोम में (संभवतः पौलुस के समय) क्रूस पर चढ़ाया गया था (सिर नीचे की ओर था)।

२. यूहन्ना (प्रिय चेला)।

क. वह एक मछुआरे थे जो प्रेरितों में से एक बन गये।

१) वह ऊर्जा से भरे हुए थे (मरकुस ३:१७), लेकिन वह दूसरों के प्रति असहिष्णु हो सकते हैं (मरकुस ९:३८)।

२) वह महत्वाकांक्षी थे (मरकुस १०:३५,३७), और प्रतिशोधी हो सकते हैं (लूका ९:५४)।

ख. उन्हें यीशु की माँ की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी (यूहन्ना १९:२६)।

ग. परंपरा कहती है कि उन्होंने अधिकतर एशिया माइनर में सेवा की। उन्होंने नए नियम की पाँच पुस्तकें लिखीं।

घ. अपने जीवन के अंत में, उन्हें नीरो द्वारा पटमोस द्वीप में निर्वासित कर दिया गया था। वह एकमात्र प्रेरित थे जो अपने विश्वास के लिए शहीद नहीं हुए थे, और शायद एक स्वाभाविक मौत मर गये।

३. बड़ा याकूब (अपने भाई यूहन्ना के साथ वे "गर्जन के पुत्र" के रूप में जाने जाते थे)।

क. वह एक मछुआरे थे जो चेलों में तीसरे सदस्य थे।

ख. वह याकूब यरूशलेम की कलीसिया के एक महान अगुवे थे। उन्होंने यरूशलेम और यहूदिया में प्रचार किया।

ग. याकूब शहीद होने वाले १२ लोगों में से पहले व्यक्ति थे। हेरोदेस ने लगभग ४४ ई. के आसपास उनका सिर काट दिया था (प्रेरितों के काम १२:१,२)।

टिप्पणियाँ —

४. अन्द्रियास (पतरस का भाई)।

क. वह एक मछुआरे थे जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के चेले थे (यूहन्ना १:३५,४०)। वह अपने भाई पतरस को मसीह के पास लाये (यूहन्ना १:४२)।

ख. परंपरा कहती है कि उन्होंने ग्रीस और एशिया माइनर (आधुनिक रूस और तुर्की) में प्रचार किया, जिसके बाद उन्हें सेंट एंड्रयूज क्रूस ("एक्स" आकार का क्रूस) पर सूली पर चढ़ा दिया गया। कहा जाता है कि उन्होंने उस भीड़ को प्रचार किया जो उन्हें मरते देखने के लिए इकट्ठी हुई थी।

५. मत्ती (लेवी)।

क. एक चुंगी लेने वाले जिन्होनें यीशु की पुकार का जवाब दिया (मत्ती ९:९)।

ख. उन्होंने मत्ती के सुसमाचार को लिखा और बाद में इथियोपिया और पार्थिया में प्रचार किया।

ग. परंपरा कहती है कि उनकी मृत्यु इथियोपिया में हुई थी।

६. थोमा (जिन्हें दिदुमुस और "संदेह करने वाले थोमा" के नाम से भी जाना जाता है)।

क. एक प्रेरित जो मसीह के प्रति समर्पित थे (यूहन्ना ११:१६), लेकिन उनकी बातों को समझने में धीमे थे (यूहन्ना १४:५)। पुनरुत्थान के बाद मसीह के प्रगट होने के समय वह अनुपस्थित थे (यूहन्ना २०:२५), और उन पर संदेह किया (यूहन्ना २०:२६)। हालाँकि, उन्हें कुछ प्रमाण दिए गए (यूहन्ना २०:२७) और फिर उन्होंने विश्वास किया (यूहन्ना २०:२८; २१:२)।

ख. परंपरा कहती है कि उन्होंने पार्थिया और भारत में सेवा की, और भारत में बरछे के वार से उनकी मृत्यु हो गयी।

७. फिलिप्पुस।

क. वह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पहले चेलों में से एक थे, फिर वह मसीह के चेले बने। यीशु के बुलाने पर वह तुरन्त गये और नतनएल को भी ले आये।

ख. एक प्रेरित जिन्हें मसीह द्वारा परखा गया (यूहन्ना ६:५) और वह समझने में धीमे थे (यूहन्ना १४:८)।

ग. परंपरा कहती है कि फ्रिगिया में उपदेश देने के बाद उनकी मृत्यु भी एक शहीद के रूप में हो गई।

टिप्पणियाँ —

८. बरतुल्मै (नतनएल के नाम से भी जाने जाते हैं)।

क. एक प्रेरित जो तब भारत में अर्मेनिया में एक सेवक थे।

ख. परंपरा कहती है कि उन्हें पीट-पीटकर मार डाला गया, फिर उनका सिर काट दिया गया।

९. याकूब

क. एक प्रेरित जिन्होनें याकूब की पुस्तक लिखी होगी।

ख. परंपरा कहती है कि उन्होंने फिलिस्तीन और मिस्र में प्रचार किया जहाँ वे अंततः शहीद हो गए। उन्हें पीटा गया, पथराव किया गया, फिर एक डंडे से मार दिया गया। उनके शरीर को आधे हिस्से में काट दिया गया था।

१०. यहूदा (उन्हें तद्दै के नाम से भी जाना जाता है)।

ग. एक प्रेरित जिन्होनें शायद यहूदा की किताब लिखी होगी।

घ. परंपरा कहती है कि उन्होंने असीरिया और फारस में प्रचार किया जहाँ उनकी मृत्यु तीरों से हुई थी।

११. शमौन (कट्टरपंथी)।

ङ. एक प्रेरित जो कट्टरपंथियों के पक्ष में थे।

च. परंपरा कहती है कि उन्होंने अफ्रीका और ब्रिटेन में प्रचार किया और ब्रिटेन में उन्हें सूली पर चढ़ाया गया।

१२. यहूदा (इस्करियोती)।

छ. वह प्रेरित जिसने समूह के पैसे का प्रबंध किया।

१) वह ईमानदार नहीं थे (यूहन्ना १२:६) और काफी लालची थे (मत्ती २६:१४,१५)।

२) वह कपटी थे (यूहन्ना १२:५,६), लेकिन यीशु को धोखा देने के बाद उन्होंने ईमानदारी से खेद प्रगट किया (मत्ती २७:३,४; प्रेरितों के काम १:१८)।

ज. उन्होंने चाँदी के ३० टुकड़ों के लिए यीशु को धोखा दिया और फिर स्वयं को लटका लिया (मत्ती २६:१४-१६; २७:३-५)।

टिप्पणियाँ —

१३. दो अतिरिक्त प्रेरित।

झ. मत्तियाह

१) उन्हें यहूदा के स्थान पर विशेष नियुक्ति के द्वारा प्रेरित बनाया गया था (प्रेरितों के काम १:२३-२६)।

२) परंपरा कहती है कि उन्होंने इथियोपिया या आर्मेनिया में प्रचार किया। उन्हें पत्थरों द्वारा मारा गया और फिर उनका सर काट दिया गया।

ञ. पौलुस (मूल रूप से शाऊल)।

१) कुछ धर्मविशेषज्ञों का मानना है कि यहूदा की जगह पौलुस को प्रेरित के रूप में बदलना परमेश्वर की पसंद थी (रोमियों १:१; १ कुरिन्थियों १:१; गलातियों १:१; १ तीमुथियुस १:१)।

२) वह अन्यजातियों के लिए प्रेरित थे (रोमियों ११:१३)।

३) उनकी प्रेरिताई परमेश्वर की आज्ञा (१ तीमुथियुस १:१), उनके यीशु को देखने (१ कुरिन्थियों ९:१), और एक प्रेरित के चिन्हों के प्रदर्शन (२ कुरिन्थियों १२:२) पर आधारित हैं।

४) परंपरा कहती है कि नीरो के आदेश के तहत रोम में उनका सिर काट दिया गया था, संभवतः उसी समय पतरस के साथ।

चर्चा का बिंदु

यीशु की सेवकाई के इस भाग का अध्ययन करने के लिए (यह एक आंशिक सूची है) उनके आश्चर्यकर्मों की निम्नलिखित सूची का उपयोग करें (नोटः अधिकांश आश्चर्यकर्म एक से अधिक सुसमाचार में प्रगट होते हैं, भले ही केवल एक संदर्भ दिया गया हो)।

टिप्पणियाँ —

ड. यीशु के आश्चर्यकर्म

१. चंगाई और छुटकारे के आश्चर्यकर्म।

क. कफरनहूम के अधिकारी का पुत्र (यूहन्ना ४:४६-५४)।

ख. आराधनालय में अशुद्ध आत्मा वाला व्यक्ति (मरकुस १:२३-२६)।

ग. कोढ़ से ग्रसित व्यक्ति (मत्ती ८:२-४)।

घ. रोम के सूबेदार का सेवक (मत्ती ८:५-१३)।

ङ. पतरस की सास (मत्ती ८:१४,१५)।

च. गदरेनियों के दो व्यक्ति (मत्ती ८:२८-३४)।

छ. लकवाग्रस्त व्यक्ति (मत्ती ९:२-७)।

ज. लहू बहने वाली स्त्री (मत्ती ९:२०-२२)।

झ. दो अन्धे व्यक्ति (मत्ती ९:२७-३१)।

ञ. गूंगा और दुष्टात्मा से ग्रसित व्यक्ति (मत्ती ९:३२,३३)।

ट. बैतहसदा के कुंड में बीमार व्यक्ति (यूहन्ना ५:१-९)।

ठ. सूखे हाथ वाला व्यक्ति (मत्ती १२:१०-१३)।

ड. वह व्यक्ति जो अन्धा, गूंगा और दुष्टात्मा से ग्रसित था (मत्ती १२:२२)।

ढ. कनानी स्त्री की बेटी (मत्ती १५:२१-२८)।

ण. बहरा और हकला व्यक्ति (मरकुस ७:३१-३७)।

त. बेतसैदा में अंधा व्यक्ति (मरकुस ८:२२-२६)।

थ. दुष्टात्मा से ग्रसित लड़का (मत्ती १७:१४-१८)।

द. जन्म से अंधा व्यक्ति (यूहन्ना ९:१-७)।

ध. अपंग स्त्री (लूका १३:११-१३)।

टिप्पणियाँ –

न. जलोदर से पीड़ित व्यक्ति (लूका १४:१-४)।

ऩ. दस कोढ़ी (लूका १७:११-१९) ।

प. दो अन्धे व्यक्ति (मत्ती २०:२९-३४)।

फ. महायाजक का सेवक (लूका २२:५०-५१)।

२. प्रकृति की शक्तियों से सम्बंधित आश्चर्यकर्म।

क. पानी का दाखरस में बदलना (यूहन्ना २:१-११)।

ख. मछली पकड़ना (लूका ५:४-११)।

ग. तूफान का शान्त होना (मत्ती ८:२३-२७)।

घ. पानी पर चलना (मत्ती १४:२५) ।

ङ. पाँच हज़ार लोगों को भोजन कराना (मत्ती १४:१५-२१) ।

च. चार हज़ार लोगों को भोजन कराना (मत्ती १४:३२-३८)।

छ. मछली के मुंह में सिक्का (मत्ती १७:२४-२७)।

ज. सूखा हुआ अंजीर का पेड़ (मत्ती २१:१८-२२)।

झ. एक बार फिर मछली को पकड़ना (यूहन्ना २१:१-११)।

३. मरे हुओं को जी उठाने से जुड़े आश्चर्यकर्म।

क. नाईन में विधवा का पुत्र (लूका ७:११-१५)।

ख. याईर की बेटी (लूका ८:४१, ४२, ४९-५६)।

ग. लाज़र (यूहन्ना ११:१-४४)।

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिंदु

संदर्भ, घटनाओं के कालक्रम और सूली पर यीशु की मृत्यु के सम्बन्ध में उनके शब्दों का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित अनुभाग का उपयोग करें।

च. यीशु का सूली पर चढ़ाया जाना

१. सामान्य घटनाएँ जो सूली पर चढ़ाने से पहले हुई थीं।

क. अंतिम भोज (लूका २२:१४)।

ख. गतसमनी का बाग़ (मत्ती २६:३६)।

ग. यीशु का पकड़वाया जाना (यूहन्ना १८:१२)।

घ. कैफा के घर में महायाजक (मरकुस १४:५३-६५)।

२. सूली पर चढ़ाए जाने की विशिष्ट घटनाएँ।

क. यीशु शुक्रवार सुबह ६:३० बजे पिलातुस के सामने गये (मरकुस १५:१--नोट: अधिकांश समय निकट सन्निकटन हैं)।

ख. यीशु को सुबह ७:०० बजे हेरोदेस के पास भेजा गया (लूका २३:६-१०)।

ग. यीशु को सुबह ७:३० बजे पीलातुस के पास वापस लाया गया (लूका २३:११)।

घ. सुबह ८;०० बजे यीशु को क्रूस पर मौत की सजा सुनाई गई (लूका २३:२३,२४)।

ङ. सुबह ८:३० बजे यीशु ने कलवरी तक पैदल चलना शुरू किया (लूका २३:२६)।

च. यीशु को सुबह ९:०० बजे सूली पर चढ़ाया गया (मरकुस १५:२५)। इसके तुरंत बाद, यीशु ने पिता से उन्हें क्षमा करने के लिए कहा (लूका २३:३४)।

छ. सुबह १०:०० बजे सिपाहियों ने यीशु के कपड़ों के लिए चिट्ठी डाली (मरकुस १५:२४)।

टिप्पणियाँ –

ज. १०:०० और ११:०० के बीच यीशु का अपमान और मज़ाक उड़ाया गया था:

१) आम जनता (मत्ती २७:३९,४०)।

२) महायाजक (मरकुस १५:३१)।

३) सिपाही (लूका २३:३६,३७)।

४) उन डाकुओं में से एक जो उसके बगल में लटका हुआ था (लूका २३:३९)।

झ. ११:०० बजे यीशु ने दूसरे डाकू के अनुरोध पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी जो उनके बगल में लटका हुआ था (लूका २३:४०-४३)।

ञ. ११:३० बजे यीशु ने यूहन्ना को अपनी माँ की देखभाल करने के लिए कहा (यूहन्ना १९:२६,२७)।

ट. दोपहर १२:०० बजे अँधेरा हो गया और दोपहर ३:०० बजे तक ऐसा ही रहा। (मरकुस १५:३३)।

ठ. दोपहर १:३० बजे यीशु ने पिता परमेश्वर को पुकारा: "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है?" (मत्ती २७:४६)।

ड. दोपहर २:०० बजे यीशु ने कहा, "मैं प्यासा हूँ" और "पूरा हुआ" (यूहन्ना १९:२८,३०)।

ढ. लगभग ३:०० बजे, यीशु ने अपने अंतिम शब्द कहे और उनकी मृत्यु हो गयी (लूका २३:४६)।

३. विशिष्ट घटनाएँ जो सूली पर चढ़ाए जाने के तुरंत बाद हुईं।

क. एक भुईंडोल हुआ और मंदिर का पर्दा फट गया (मत्ती २७:५१)।

ख. कब्रें खुल गयीं (मत्ती २७:५४) ।

ग. सूबेदार ने यीशु की ईश्वरीयता की घोषणा की (मत्ती २७:५४)।

घ. भीड़ दुखी थी (लूका २३:४८)।

ङ. डाकुओं की मृत्यु जल्दी हो जाए इसलिए उनकी टांगों को तोड़ दिया गया (यूहन्ना १९:३१,३२)।

टिप्पणियाँ —

च. यीशु के पंजर को भेदा गया था (यूहन्ना १९:३४)।

छ. यीशु को दफनाया गया था (यूहन्ना १९:३८-४२)।

ज. कब्र को बंद करके एक पहरेदार को तैनात किया गया था (मत्ती २७:६६)।

पाठ्यक्रम का निष्कर्ष:

यहाँ पर नए नियम I का समापन होता है, जिसने चार सुसमाचारों के भीतर विषयों का सर्वेक्षण किया। विषयों में शामिल हैं: मसीह के विवरण, मसीह की ईश्वरीयता, मसीह के जीवन की रूपरेखा, मसीह के प्रेरित (चेले), मसीह के आश्चर्यकर्म, और मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना। इस श्रृंखला का अगला पाठ्यक्रम, नया नियम II, कलीसिया के जन्म का सर्वेक्षण करता है।